प्रतिदर्श प्रश्नपत्र, 2022-23

विषय-हिंदी, कोर्स-ए (कोड-002)

Sample Paper - 1

निर्धारित समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश :

(1) इस प्रश्नपत्र में दो खंड हैं- खंड 'क' और ख'। खंड-क में वस्तुपरक/बहविकल्पी और खंड-ख में वस्तुनिष्ठ/वर्णनात्मक प्रश्न दिए गए हैं।

(2) प्रश्नपत्र के दोनों खंडों में प्रश्नों की संख्या 17 है और सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(3) यथासंभव सभी प्रश्नों के उत्तर क्रमानुसार लिखिए।

(4) खंड 'क' में कुल 10 प्रश्न हैं, जिनमें उपप्रश्नों की संख्या 49 है। दिए गए निर्देशों का पालन करते हए 40 उपप्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

(5) खंड 'ख' में कुल 7 प्रश्न हैं, सभी प्रश्नों के साथ उनके विकल्प भी दिए गए हैं। निर्देशानुसार विकल्प का ध्यान रखते हए सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खंड - अ (बहुविकल्पी / वस्तुपरक प्रश्न)

1. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** [5]

फिजूलखर्ची एक बुराई है, यदि इसके पीछे बारीकी से नज़र डालें तो अहंकार नज़र आएगा। अहं के प्रदर्शन से तृप्ति मिलती है। अहं की पूर्ति के लिए कई बार बुराइयों से रिश्ता भी जोड़ना पड़ता है। अहंकारी लोग बाहर से भले ही गंभीरता का आवरण ओढ़ लें, लेकिन भीतर से वे उथलेपन से भरे रहते हैं।

जब कभी समुद्र तट पर जाने का मौका मिले, तो आप देखेंगे कि लहरें आती हैं, जाती हैं और चट्टानों से टकराती हैं। पत्थर वहीं रहते हैं, लहरें उन्हें भिगोकर लौट जाती हैं। हमारे भीतर हमारे आवेगों की लहरें भी हमें ऐसे ही टक्कर देती हैं।

इन आवेगों, आवेशों के प्रति अडिग रहने का अभ्यास करना होगा, क्योंकि अहंकार यदि लंबे समय तक टिकने की तैयारी में आ जाए, तो वह नए-नए तरीके ढूँढेगा। स्वयं को महत्त्व मिले अथवा स्वेच्छाचारिता के प्रति आग्रह, ये सब धीरे-धीरे सामान्य जीवन-शैली बन जाती है। ईसा मसीह ने कहा है- "मैं उन्हें धन्य कहूँगा, जो अंतिम हैं।" आज के भौतिक युग में यह टिप्पणी कौन स्वीकारेगा, जब 'चारों ओर नंबर वन' होने की होड़ लगी है।

ईसा मसीह ने इसी में आगे जोड़ा है कि "ईश्वर के राज्य में वही प्रथम होंगे, जो अंतिम हैं और जो प्रथम होने की दौड़ में रहेंगे, वे अभागे रहेंगे।" यहाँ 'अंतिम' होने का संबंध लक्ष्य और सफलता से नहीं है। जीसस ने विनम्रता, निरहंकारिता को शब्द दिया है 'अंतिम'। आपके प्रयास व परिणाम प्रथम हों, अग्रणी रहें, पर आप भीतर से अंतिम हों यानी विनम्र, निरहंकारी रहें। अन्यथा अहं अकारण ही जीवन के आनंद को खा जाता है।

(i) अहं अकारण ही जीवन के आनंद को खा जाता है - इस कथन की सत्यता सिद्ध करने वाले कारक हैं -

i. स्वयं को महत्व देना

ii. गंभीरता का आवरण ओढ़ना

iii. स्वेच्छाचारिता को महत्व देना

iv. आवेशों के प्रति अडिग रहना

क) कथन i, ii व iv सही हैं
ख) कथन ii व iv सही हैं
ग) कथन i व iii सही हैं
घ) कथन ii सही है

(ii) अहंकारी व्यक्तियों की किन कमियों की ओर संकेत किया गया है?

क) सभी विकल्प सही हैं
ख) अहंकारी व्यक्ति सतही मानसिकता रखते हैं
ग) अहंकारी व्यक्ति भीतर से उथलेपन से भरे होते हैं
घ) अहंकारी व्यक्ति किसी भी प्रकार से अपने अहं का प्रदर्शन करना चाहते हैं

(iii) लेखक ने मानव मन में उद्वेलित होने वाली भावनाओं की तुलना किससे की है?

क) ईसा मसीह से
ख) भौतिक आकांक्षाओं से
ग) समुद्र तट की लहरों से
घ) निरहंकार से

(iv) प्रस्तुत गद्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक क्या होगा?

i. अहंकार: एक बड़ा अवगुण
ii. फिजूलखर्ची का महत्त्व
iii. मनुष्य की जीवन-शैली
iv. जीसस के विचार

क) विकल्प (ii)
ख) विकल्प (iii)
ग) विकल्प (i)
घ) विकल्प (iv)

(v) कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए-
कथन (A): फिजूलखर्ची सूक्ष्म दृष्टि से अहंकार प्रदर्शन ही है।
कारण (R): लंबे समय तक टिकने वाला अहंकार स्वयं को महत्व देने के नए - नए तरीके खोजता है।

क) कथन (A) और कारण (R) दोनों ही गलत हैं।
ख) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
ग) कथन (A) सही है किन्तु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
घ) कथन (A) गलत है किन्तु कारण (R) सही है।

2. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[5]**

मुक्त करो नारी को, मानव!
चिर बंदिनि नारी को,
युग-युग की बर्बर कारा से
जननि, सखी, प्यारी को!

छिन्न करो सब स्वर्ण-पाश
उसके कोमल तन-मन के,
वे आभूषण नहीं, दाम
उसके बंदी जीवन के!
उसे मानवी का गौरव दे
पूर्ण सत्व दो नूतन,
उसका मुख जग का प्रकाश हो,
उठे अंध अवगुंठन।
मुक्त करो जीवन-संगिनि को,
जननि देवि को आदृत
जगजीवन में मानव के संग
हो मानवी प्रतिष्ठित!
प्रेम स्वर्ग हो धरा, मधुर
नारी महिमा से मंडित,
नारी-मुख की नव किरणों से
युग-प्रभाव हो ज्योतित!
-- युगवाणी

(i) कवि नारी को किस दशा से मुक्त कराना चाहता है -

i. पुरुष के बंधन से
ii. बंदी जीवन से
iii. परिवार के बंधन से
iv. समाज के बंधन से

क) कथन i व iii सही हैं
ख) कथन i व ii सही हैं
ग) कथन i, ii, iii व iv सही हैं
घ) कथन i, ii व iii सही हैं

(ii) **छिन्न करो सब स्वर्ण पाश** से क्या तात्पर्य है?

क) नारी को लोहे की जंजीरों से अलग करना
ख) नारी को सोने के आभूषण से अलग करना
ग) नारी को सब प्रकार की वस्तुओं से अलग करना
घ) नारी को समाज से अलग करना

(iii) कवि नारी को किस-किस रूप में प्रतिष्ठित करना चाहता है?

क) संघर्षी के रूप में
ख) मानवी, युग को प्रकाश देने वाली के रूप में
ग) माता के रूप में
घ) बंदिनी के रूप में

(iv) **युग-युग की बर्बर कारा से** पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

क) अनुप्रास अलंकार
ख) श्लेष अलंकार

ग) यमक अलंकार

घ) पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार

(v) कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए –
कथन (A): समाज में नारी का स्थान पुरुषों की ही तरह विशिष्ट होना चाहिए।
कथन (R): पुरुष प्रधान समाज में बंधन से मुक्त होने पर नारी सशक्त हो जाती है।

क) कथन (A) और कारण (R) दोनों ही गलत हैं।

ख) कथन (A) गलत है किन्तु कारण (R) सही है।

ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

घ) कथन (A) सही है किन्तु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

अथवा

अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये: [5]

मैं तो मात्र मृत्तिका हूँ-
जब तुम मुझे पैरों से रौंदते हो।
तथा हल के फाल से विदीर्ण करते हो
तब मैं-
धन-धान्य बनकर मातृरूपा हो जाती हूँ।
पर जब भी तुम
अपने पुरुषार्थ-पराजित स्वत्व से मुझे पुकारते हो
तब मैं
अपने ग्राम्य देवत्व के साथ चिन्मयी शक्ति हो जाती हूँ
प्रतिमा बन तुम्हारी आराध्या हो जाती हूँ।
विश्वास करो
यह सबसे बड़ा देवत्व है कि
तुम पुरुषार्थ करते मनुष्य हो
और में स्वरूप पाती मृत्तिका।
-- नरेश मेहता

(i) निम्नलिखित कथनों की सत्यता पर विचार कीजिए -
i. अपनेपन की भावना से पुकारने पर मिट्टी चेतनास्वरूप हो जाती है।
ii. सबसे बड़ा देवत्व असाधारण पुरुषार्थ करना है।
iii. अपने असाधारण पुरुषार्थ के कारण मिट्टी अनेक रूप - प्रतिरूप में बदलती है।
iv. मिट्टी अपने रूप को स्वयं परिवर्तित करती है।

क) कथन i, ii व iii सही हैं

ख) कथन i व iii सही हैं

ग) कथन ii, iii व iv सही हैं

घ) कथन ii व iv सही हैं

(ii) मिट्टी चिन्मयी शक्ति कब बन जाती है, कैसे?

क) जब मनुष्य मिट्टी को पुरुषार्थ की

ख) जब मनुष्य मिट्टी को अपनेपन की

भावना से पुकारता है। भावना से नहीं पुकारता है।

ग) जब मनुष्य मिट्टी को अपनेपन की भावना से पुकारता है।
घ) जब मनुष्य मिट्टी को परिश्रम को देवत्व की भावना से पुकारता है।

(iii) काव्यांश में क्या सन्देश निहित है?

क) मिट्टी को पुरुषार्थ से सींचने का।
ख) मिट्टी को पूजनीय मानना।
ग) साधारण वस्तु को महत्वहीन समझना।
घ) साधारण वस्तु को महत्वहीन न समझना।

(iv) मिट्टी को मातृरूपा क्यों कहा गया है?

क) क्योंकि वह मनुष्य का अहंकार समाप्त करती है।
ख) क्योंकि वह हमारा भरण - पोषण करती है।
ग) क्योंकि वह हमारी माता है।
घ) क्योंकि वह मिट्टी है।

(v) कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए –
कथन (A): जब तक मिट्टी मानव के संपर्क में नहीं आती तब तक वह अपने साधारण रूप ,में ही रहती है।
कथन (R): मानव स्पर्श से ही मिट्टी अपने साधारण रूप का त्याग कर धन - धान्य से पूर्ण असाधारण रूप को धारण कर लेती है।

क) कथन (A) गलत है किन्तु कारण (R) सही है।
ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों ही गलत हैं।
ग) कथन (A) सही है किन्तु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

3. निर्देशानुसार 'वाच्य' पर आधारित पाँच बहुविकल्पी प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए- **[4]**

(i) इस वाक्य का वाच्य लिखिए- अशोक ने विश्व को शांति का संदेश दिया

क) कर्तृवाच्य
ख) कर्मवाच्य
ग) करणवाच्य
घ) भाववाच्य

(ii) **सुमन जल्दी नहीं उठती।** (प्रस्तुत वाक्य को भाववाच्य में परिवर्तित कीजिए।)

क) सुमन से जल्दी नहीं उठा जाता।
ख) सुमन जल्दी नहीं उठ पाती।
ग) सुमन जल्दी से नहीं उठ सकेगी।
घ) सुमन जल्दी नहीं उठ पाएगी।

(iii) **गायिका ने मधुर गीत गाए** वाक्य को कर्मवाच्य में बदलिए।

क) गायिका द्वारा मधुर गीत गाए गए
ख) गायिका द्वारा मधुर गीत गाया

गया

ग) गायिका मधुर गीत गाती है

घ) गायिका द्वारा मधुर गीत गाया जा सका

(iv) निम्नलिखित में से कौन-सा कर्तृवाच्य का सही विकल्प है?

i. परीक्षा के बारे में अध्यापक द्वारा क्या कहा गया?

ii. परीक्षा के बारे में अध्यापक ने क्या कहा?

iii. परीक्षा के बारे में अध्यापक के द्वारा क्या कहा जा सकता है।

iv. परीक्षा के बारे में अध्यापक को क्या कहें?

क) विकल्प (iii)

ख) विकल्प (ii)

ग) विकल्प (i)

घ) विकल्प (iv)

(v) **आओ अब चलते हैं**, वाक्य को भाववाच्य में बदलिए-

क) क्या अब हम चल सकते हैं।

ख) चलो चला जाए।

ग) अब चला नहीं जाता।

घ) आइए, अब चला जाए।

4. निर्देशानुसार 'पद परिचय' पर आधारित पाँच बहुविकल्पी प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए- **[4]**

(i) हनुमान जी ने सभी कार्य श्रीराम <u>**के निमित्त**</u> किए रेखांकित पद का परिचय है

क) कारणवाचक संबंधबोधक अव्यय, संबंधी शब्द 'श्रीराम'

ख) साधनवाचक संबंधबोधक अव्यय, संबंधी शब्द 'श्रीराम'

ग) विरोधवाचक संबंधबोधक अव्यय, संबंधी शब्द 'श्रीराम'

घ) दिशावाचक संबंधबोधक अव्यय, संबंधी शब्द 'श्रीराम

(ii) <u>**आजकल**</u> ध्वनि प्रदूषण बहुत तेजी से फैल रहा है। रेखांकित पद के लिए उचित पद परिचय चुनिए।

क) अव्यय, क्रिया विशेषण, रीतिवाचक

ख) अव्यय, क्रिया विशेषण, कालवाचक

ग) अकर्मक क्रिया, वर्तमान काल, पुल्लिंग, एकवचन

घ) अव्यय, स्थानवाचक, क्रिया विशेषण

(iii) यह घड़ी मेरे <u>**छोटे**</u> भाई की है। वाक्य में रेखांकित पद है-

क) सार्वनामिक विशेषण

ख) जातिवाचक संज्ञा

ग) प्रविशेषण

घ) गुणवाचक विशेषण

(iv) पानवाला <u>**नया**</u> पान खा रहा था। रेखांकित पद का परिचय है-

क) विशेषण, गुणवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, 'पान' विशेष्य।

ख) विशेषण, गुणवाचक, पुल्लिंग, बहुवचन, 'पान' विशेष्य।

ग) विशेषण, गुणवाचक, नपुसंकलिंग, एकवचन, 'पान' विशेष्य।

घ) विशेषण, गुणवाचक, स्त्रीलिंग, एकवचन, 'पान' विशेष्य।

(v) **हिमालय से गंगा निकलती हैं** वाक्य में **हिमालय से** का पद परिचय बताइए।

क) व्यक्तिवाचक संज्ञा, सम्प्रदान कारक, पुल्लिंग

ख) जातिवाचक संज्ञा, करण कारक, पुल्लिंग

ग) जातिवाचक संज्ञा, संबंध कारक, पुल्लिंग

घ) व्यक्तिवाचक संज्ञा, अपादान कारक, पुल्लिंग

5. निर्देशानुसार 'रचना के आधार पर वाक्य भेद' पर आधारित पाँच बहुविकल्पी प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए- **[4]**

(i) **सभी लोगों ने वह सुंदर दृश्य देखा।** रचना के आधार पर भेद बताइए।

क) संयुक्त वाक्य

ख) सरल वाक्य

ग) आज्ञावाचक वाक्य

घ) विधानवाचक वाक्य

(ii) सरल वाक्य का उदाहरण है-

i. जब भी होटल आओ, मुझसे जरूर मिलना।

ii. वह बीमार है, इसलिए घर नहीं आएगा।

iii. वह चोर था, इसलिए पकड़ा गया।

iv. सायंकाल तक सभी पक्षी वापस आ गए।

क) विकल्प (iv)

ख) विकल्प (i)

ग) विकल्प (ii)

घ) विकल्प (iii)

(iii) संयुक्त वाक्य का उदाहरण है-

क) मुझे अब यहाँ से चलना चाहिए।

ख) राजा ने कहा कि चोर को मृत्युदंड दिया जाए।

ग) राहुल घर चला गया और सो गया।

घ) आज वर्षा अधिक हो रही है।

(iv) **उसने स्टेडियम जाकर क्रिकेट मैच देखा।** संयुक्त वाक्य में बदलिए।

क) जब वह स्टेडियम गया तब उसने क्रिकेट मैच देखा।

ख) वह स्टेडियम जाता है और मैच देखता है।

ग) स्टेडियम जाओ और मैच देखो।

घ) वह स्टेडियम गया और उसने क्रिकेट मैच देखा।

(v) केवट ने कहा कि बिना पाँव धोए आपको नाव पर नहीं चढ़ाऊँगा। आश्रित उपवाक्य छाँटकर

भेद भी लिखिए।

क) बिना पाँव धोए आपको नाव पर नहीं चढ़ाऊँगा। (सर्वनाम उपवाक्य)

ख) बिना पाँव धोए आपको नाव पर नहीं चढ़ाऊँगा। (संज्ञा उपवाक्य)

ग) बिना पाँव धोए आपको नाव पर नहीं चढ़ाऊँगा। (क्रिया उपवाक्य)

घ) बिना पाँव धोए आपको नाव पर नहीं चढ़ाऊँगा। (विशेषण उपवाक्य)

6. निर्देशानुसार 'अलंकार' पर आधारित पाँच बहुविकल्पी प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए- **[4]**

(i) **जिस वीरता से शत्रुओं का सामना उसने किया।**
असमर्थ हो उसके कथन में मौन वाणी ने लिया।
पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

क) अतिश्योक्ति अलंकार

ख) अनुप्रास अलंकार

ग) उपमा अलंकार

घ) यमक अलंकार

(ii) **बीच में अलसी हठीली, देह की पतली, कमर की है लचीली।** पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

क) अनुप्रास अलंकार

ख) मानवीकरण अलंकार

ग) रूपक अलंकार

घ) उत्प्रेक्षा अलंकार

(iii) **खंड-खंड करताल बाजार ही विशुद्ध हवा।** पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

क) रूपक अलंकार

ख) अनुप्रास अलंकार

ग) उपमा अलंकार

घ) मानवीकरण अलंकार

(iv) **जगी वनस्पतियाँ अलसाई मुह धोया शीतल जल से।** इस में कौन सा अलंकार है?

क) मानवीकरण अलंकार

ख) यमक अलंकार

ग) उपमा अलंकार

घ) रूपक अलंकार

(v) निम्नलिखित पंक्ति में अलंकार बताइए-
उषा सुनहरे तीर बरसाती, जय लक्ष्मी-सी उदित हुई।

क) रूपक अलंकार

ख) मानवीकरण अलंकार

ग) अनुप्रास अलंकार

घ) उपमा अलंकार

7. गद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित दो बहुविकल्पी प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए- **[2]**

(i) पिताजी रसोईघर को क्या कहते थे?

क) भटियारखाना

ख) पूजनीय स्थान

ग) मनोरंजन का स्थान

घ) स्त्रियों का प्रिय स्थल

(ii) नवाव के अनुसार खीरे का दुर्गुण है-

क) खाने से अमाशय पर बोझ पड़ता है तथा खीरा सुपाच्य नहीं है दोनों

ख) खीरा में पानी की मात्रा अधिक होती है

ग) खाने से अमाशय पर बोझ पड़ता है

घ) खीरा सुपाच्य नहीं है

8. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** [5]

बार-बार सोचते, क्या होगा उस कौम का जो अपने देश की खातिर घर-गृहस्थी-जवानी-ज़िंदगी सब कुछ छोड़ देने वालों पर भी हँसती है और अपने लिए बिकने के मौके ढूँढती है। दुः खी हो गए। पंद्रह दिन बाद फिर उसी कस्बे से गुज़रे। कस्बे में घुसने से पहले ही ख्याल आया कि कस्बे कि हृदयस्थली में सुभाष की प्रतिमा अवश्य ही प्रतिष्ठापित होगी, लेकिन सुभाष की आँखों पर चश्मा नहीं होगा....! क्योंकि मास्टर बनाना भूल गया।.... और कैप्टन मर गया। सोचा, आज वहाँ रुकेंगे नहीं, पान भी नहीं खाएँगे, मूर्ति की तरफ़ देखेंगे भी नहीं, सीधे निकल जाएँगे। ड्राइवर से कह दिया, चौराहे पर रुकना नहीं, आज बहुत काम है, पान आगे कहीं खा लेंगे।

(i) हालदार साहब कस्बे से कब गुजरे

क) पंद्रह दिन बाद

ख) दस दिन बाद

ग) दो दिन बाद

घ) सोलह दिन बाद

(ii) अपने लिए बिकने के मौके कौन ढूँढते हैं?

क) स्वार्थी लोग

ख) देशभक्त लोग

ग) देश के लिए अपना सर्वस्व होम कर देने वाले लोग

घ) कस्बे में रहने वाले लोग

(iii) हालदार साहब ने ड्राइवर से क्या कहा?

क) पान कहीं आगे खा लेंगे

ख) सभी विकल्प सही हैं

ग) आज बहुत काम है

घ) चौराहे पर रुकना नहीं

(iv) कस्बे में घुसने से पहले हालदार साहब को क्या ख्याल आया?

क) चौराहे पर सुभाष की मूर्ति अवश्य होगी

ख) मास्टर चश्मा बनाना भूल और कैप्टन मर गया

ग) सभी विकल्प सही हैं

घ) लेकिन मूर्ति की आँखों पर चश्मा नहीं होगा

(v) **चौराहा** में कौन-सा समास है?

क) तत्पुरुष समास
ख) द्विगु समास
ग) अव्ययीभाव समास
घ) द्वंद्व समास

9. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** [5]

नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा।।
आयेसु काह कहिअ किन मोहि। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही।।
सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरिकरनी करि करिअ लराई।।
सुनहु राम जेहि सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा।।
सो बिलगाउ बिहाइ समाजा। न त मारे जैहहिं सब राजा।।
सुनि मुनिबचन लखन मुसुकाने। बोले परसुधरहि अवमाने।।
बहु धनुहीं तोरी लरिकाईं। कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं।।
येहि धनु पर ममता केहि हेतू। सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतू।।
रे नृप बालक कालबस, बोलत तोहि न सँभार।
धनुही सम तिपुरारि धनु, बिदित सकल संसार।।

(i) राम ने परशुराम से क्या कहा ?

क) सभी विकल्प सही हैं
ख) ऐसे धनुष हमने बहुत तोड़े हैं
ग) शिव धनुष तोड़ने वाला मैं हूँ
घ) शिव धनुष तोड़ने वाला आपका ही दास है

(ii) **सेवक से जो करै सेवकाई** से कवि का आशय है?

क) सेवा करने वाला सेवक नहीं होता
ख) सभी विकल्प सही हैं
ग) जो मन से सेवा करता है
घ) सेवक वही है जो सेवा करता है

(iii) श्रीराम परशुराम के क्रोध के सामने विनम्र क्यों रहे?

i. क्योंकि क्रोधी को क्रोध से जीतना बुद्धिमता नहीं है
ii. संत से विनम्र होना मजबूरी थी
iii. राम का स्वभाव ही ऐसा था
iv. परशुराम के भय से

क) विकल्प (iii)
ख) विकल्प (iv)
ग) विकल्प (ii)
घ) विकल्प (i)

(iv) परशुराम को राम ने क्या कहकर संबोधित किया?

क) नाथ
ख) देवता
ग) महर्षि
घ) मुनिवर

(v) सहसबाहु किसका शत्रु था?

क) राजा जनक का | ख) महर्षि परशुराम का

ग) राजा दशरथ का | घ) जनक पुर का

10. पद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित दो बहुविकल्पी प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए- **[2]**

(i) कविता **अट नहीं रही है** में किस ऋतु के प्राकृतिक सौदर्य का चित्रण किया गया है?

क) ग्रीष्म ऋतु | ख) वर्षा ऋतु

ग) शरद ऋतु | घ) वसंत ऋतु

(ii) **संगतकार** के स्वर में हिचक क्यों सुनाई देती है?

क) वह ऊँचे स्वर में गा नहीं सकता | ख) उसका काम केवल साथ देना होता है

ग) सभी | घ) वह मुख्य गायक का मान रखने के लिए ऐसा करता है

खंड - ख (वर्णनात्मक प्रश्न)

11. पद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में लिखिए- **[6]**

(i) भोली-भाली गोपियों और चींटियों में क्या समानता दर्शाई गई है?

(ii) संगतकार की मनुष्यता किसे कहा गया है? वह मनुष्यता कैसे बनाए रखता है?

(iii) **आत्मकथ्य** कविता की काव्यभाषा की विशेषताएँ उदाहरण सहित लिखिए।

(iv) कविता में फसल उपजाने के लिए आवश्यक तत्वों की बात कही गई है। वे आवश्यक तत्व कौन-कौन से हैं?

12. गद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में लिखिए- **[6]**

(i) लेखक ने बिस्मिल्ला खाँ को वास्तविक अर्थों में सच्चा इंसान क्यों माना है?

(ii) **संस्कृति** पाठ के अनुसार मनुष्य की संस्कृति की जननी किसे कहा जा सकता है और क्यों?

(iii) मन्नू भंडारी की हिन्दी अध्यापिका को कॉलेज वालों ने क्यों और क्या नोटिस दिया था ? 'एक कहानी यह भी पाठ के आधार पर समझाइए।

(iv) बालगोबिन भगत की पुत्र-वधू उन्हें अकेले क्यों नहीं छोड़ना चाहती थी?

13. पूरक पाठ्यपुस्तक के पाठों पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 -शब्दों में लिखिए- **[8]**

(i) **में क्यों लिखता हूँ?** पाठ आपको विज्ञान का दुरुपयोग रोकने में कैसे प्रेरित करता है?

(ii) **कितना कम लेकर ये समाज को कितना अधिक वापस लौटा देती हैं।** साना-साना हाथ जोड़ि पाठ के इस कथन में निहित जीवन मूल्यों को स्पष्ट कीजिए और बताइए कि देश की प्रगति में नागरिक की क्या भूमिका है?

(iii) 'माता का आँचल' पाठ के आधार पर भोलानाथ और उसके पिता के सम्बन्धों का विश्लेषण करते हुए पिता-पुत्र सम्बन्धों के महत्व पर प्रकाश डालिए।

14. सार्वजनिक स्थलों पर बढ़ते हुए धूम्रपान तथा उसके कारण संभावित रोगों की ओर संकेत करते हुए किसी दैनिक समाचार पत्र के संपादक को 80-100 शब्दों में पत्र लिखिए। **[5]**

अथवा

पिछली कक्षा में आपने अपने विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया था। इसके लिए आपको विद्यालय के वार्षिकोत्सव में सम्मानित एवं पुरस्कृत किया जाना है। इस अवसर पर आपकी माता जी उपस्थित रहें। माता जी को बुलाने के लिए पत्र लिखिए।

15. खादी ग्रामोद्योग बोर्ड, किंग्सवे कैंप, दिल्ली के महाप्रबंधक को विक्रय प्रतिनिधि (सेल्स एक्जक्यूटिव) पद के लिए स्ववृत सहित आवेदन-पत्र लिखिए। **[5]**

अथवा

अपने प्रधानाचार्य abcschool@gmail.com को इमेल लिखिए जिसमें अन्य विद्यालय से फ़ुटबॉल मैच खेलने की अनुमति माँगी गई हो।

16. टूथपेस्ट बनाने वाली कंपनी के लिए एक विज्ञापन 25-50 शब्दों में तैयार कीजिए। **[4]**

अथवा

स्वतंत्रता दिवस पर देशवासियों के लिए शुभकामना संदेश लिखिए।

17. **स्वास्थ्य की रक्षा** विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर अनुच्छेद लिखिए। **[6]**

- आवश्यकता
- पोषक भोजन
- लाभकारी सुझाव

अथवा

शारीरिक श्रम विषय पर दिए गए संकेत-बिन्दुओं के आधार पर अनुच्छेद लिखिए।

- श्रम और मानव जीवन
- लाभ
- सुझाव

अथवा

भारत में बाल मज़दूरी की समस्या विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर अनुच्छेद लिखिए।

- बाल मज़दूरी का अर्थ
- बाल मज़दूरी के कारण
- बाल मज़दूरी को दूर करने के उपाय

Solution

खंड - अ (बहुविकल्पी / वस्तुपरक प्रश्न)

1. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

फिजूलखर्ची एक बुराई है, यदि इसके पीछे बारीकी से नज़र डालें तो अहंकार नज़र आएगा। अहं के प्रदर्शन से तृप्ति मिलती है। अहं की पूर्ति के लिए कई बार बुराइयों से रिश्ता भी जोड़ना पड़ता है। अहंकारी लोग बाहर से भले ही गंभीरता का आवरण ओढ़ लें, लेकिन भीतर से वे उथलेपन से भरे रहते हैं।

जब कभी समुद्र तट पर जाने का मौका मिले, तो आप देखेंगे कि लहरें आती हैं, जाती हैं और चट्टानों से टकराती हैं। पत्थर वहीं रहते हैं, लहरें उन्हें भिगोकर लौट जाती हैं। हमारे भीतर हमारे आवेगों की लहरें भी हमें ऐसे ही टक्कर देती हैं।

इन आवेगों, आवेशों के प्रति अडिग रहने का अभ्यास करना होगा, क्योंकि अहंकार यदि लंबे समय तक टिकने की तैयारी में आ जाए, तो वह नए-नए तरीके ढूँढेगा। स्वयं को महत्त्व मिले अथवा स्वेच्छाचारिता के प्रति आग्रह, ये सब धीरे-धीरे सामान्य जीवन-शैली बन जाती है। ईसा मसीह ने कहा है- "मैं उन्हें धन्य कहूँगा, जो अंतिम हैं।" आज के भौतिक युग में यह टिप्पणी कौन स्वीकारेगा, जब 'चारों ओर नंबर वन' होने की होड़ लगी है।

ईसा मसीह ने इसी में आगे जोड़ा है कि "ईश्वर के राज्य में वही प्रथम होंगे, जो अंतिम हैं और जो प्रथम होने की दौड़ में रहेंगे, वे अभागे रहेंगे।" यहाँ 'अंतिम' होने का संबंध लक्ष्य और सफलता से नहीं है। जीसस ने विनम्रता, निरहंकारिता को शब्द दिया है 'अंतिम'। आपके प्रयास व परिणाम प्रथम हों, अग्रणी रहें, पर आप भीतर से अंतिम हों यानी विनम्र, निरहंकारी रहें। अन्यथा अहं अकारण ही जीवन के आनंद को खा जाता है।

(i) **(ग)** कथन i व iii सही हैं
व्याख्या: कथन i व iii सही हैं

(ii) **(क)** सभी विकल्प सही हैं
व्याख्या: गद्यांश में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि अहंकारी लोग बाहर से भले ही गंभीरता का आवरण ओढ़ लें, लेकिन भीतर से वे उथलेपन से भरे होते हैं, वे सतही मानसिकता रखते हैं और किसी भी प्रकार से अपने अहं का प्रदर्शन करना चाहते हैं। इस प्रकार, सभी विकल्प सही हैं।

(iii) **(ग)** समुद्र तट की लहरों से
व्याख्या: लेखक ने मानव मन में उद्वेलित होने वाली भावनाओं की तुलना समुद्र तट की लहरों से की है। जिस प्रकार समुद्र की लहरें आते-जाते समय चट्टानों के पत्थरों को भिगोकर चली जाती हैं, उसी प्रकार हमारे भीतर आवेगों की लहरें भी हमें टक्कर देती रहती हैं।

(iv) **(ग)** विकल्प (i)
व्याख्या: प्रस्तुत गद्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक 'अहंकार: एक बड़ा अवगुण' होगा, क्योंकि यहाँ अहंकार के कारण होने वाली हानि पर प्रकाश डालते हुए उसे मनुष्य के लिए अनुपयुक्त माना है।

(v) **(ग)** कथन (A) सही है किन्तु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
व्याख्या: कथन (A) सही है किन्तु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

2. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

मुक्त करो नारी को, मानव!
चिर बंदिनि नारी को,

युग-युग की बर्बर कारा से
जननि, सखी, प्यारी को!
छिन्न करो सब स्वर्ण-पाश
उसके कोमल तन-मन के,
वे आभूषण नहीं, दाम
उसके बंदी जीवन के!
उसे मानवी का गौरव दे
पूर्ण सत्व दो नूतन,
उसका मुख जग का प्रकाश हो,
उठे अंध अवगुंठन।
मुक्त करो जीवन-संगिनि को,
जननि देवि को आदृत
जगजीवन में मानव के संग
हो मानवी प्रतिष्ठित!
प्रेम स्वर्ग हो धरा, मधुर
नारी महिमा से मंडित,
नारी-मुख की नव किरणों से
युग-प्रभाव हो ज्योतित!
-- युगवाणी

(i) **(ख)** कथन i व ii सही हैं
व्याख्या: कवि नारी को पुरुष के बंधन से मुक्त कराना चाहता है ताकि वह स्वतंत्र होकर जी सके।

(ii) **(ख)** नारी को सोने के आभूषण से अलग करना
व्याख्या: कवि नारी के आभूषणों को उसके अलंकरण का साधन न मानकर बंधन मानता है। वह नारी को सोने के आभूषणों रूपी बंधनों से मुक्त करना चाहता है।

(iii) **(ख)** मानवी, युग को प्रकाश देने वाली के रूप में
व्याख्या: कवि नारी को मानवी, युग को प्रकाश देने वाली के रूप में प्रतिष्ठित करना चाहता है तांकि नारी के नए रूप से नए युग का प्रभाव हो और वह (नारी) अपने कार्यों से समाज को दिशा प्रदान कर सके।

(iv) **(घ)** पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार
व्याख्या: 'युग-युग की बर्बर कारा से' पंक्ति में युग शब्द की दो बार आवृत्ति होने के कारण यहाँ पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है।

(v) **(ग)** कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
व्याख्या: कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

अथवा

अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:

मैं तो मात्र मृत्तिका हूँ-
जब तुम मुझे पैरों से रौंदते हो।
तथा हल के फाल से विदीर्ण करते हो
तब मैं-
धन-धान्य बनकर मातृरूपा हो जाती हूँ।

पर जब भी तुम
अपने पुरुषार्थ-पराजित स्वत्व से मुझे पुकारते हो
तब मैं
अपने ग्राम्य देवत्व के साथ विन्मयी शक्ति हो जाती हूँ
प्रतिमा बन तुम्हारी आराध्या हो जाती हूँ।
विश्वास करो
यह सबसे बड़ा देवत्व है कि
तुम पुरुषार्थ करते मनुष्य हो
और में स्वरूप पाती मृत्तिका।
-- नरेश मेहता

(i) **(क)** कथन i, ii व iii सही हैं
व्याख्या: कथन i, ii व iii सही हैं
(ii) **(ग)** जब मनुष्य मिट्टी को अपनेपन की भावना से पुकारता है।
व्याख्या: जब मनुष्य मिट्टी को अपनेपन की भावना से पुकारता है।
(iii) **(घ)** साधारण वस्तु को महत्वहीन न समझना।
व्याख्या: साधारण वस्तु को महत्वहीन न समझना।
(iv) **(ख)** क्योंकि वह हमारा भरण - पोषण करती है।
व्याख्या: क्योंकि वह हमारा भरण - पोषण करती है।
(v) **(क)** कथन (A) गलत है किन्तु कारण (R) सही है।
व्याख्या: कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

3. निर्देशानुसार 'वाच्य' पर आधारित पाँच बहुविकल्पी प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(i) **(क)** कर्तृवाच्य
व्याख्या: कर्तृवाच्य
(ii) **(क)** सुमन से जल्दी नहीं उठा जाता।
व्याख्या: सुमन से जल्दी नहीं उठा जाता।
(iii) **(क)** गायिका द्वारा मधुर गीत गाए गए
व्याख्या: गायिका द्वारा मधुर गीत गाए गए
(iv) **(ख)** विकल्प (ii)
व्याख्या: परीक्षा के बारे में अध्यापक ने क्या कहा?
(v) **(घ)** आइए, अब चला जाए।
व्याख्या: आइए, अब चला जाए।

4. निर्देशानुसार 'पद परिचय' पर आधारित पाँच बहुविकल्पी प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(i) **(क)** कारणवाचक संबंधबोधक अव्यय, संबंधी शब्द 'श्रीराम'
व्याख्या: कारणवाचक संबंधबोधक अव्यय, संबंधी शब्द 'श्रीराम'
(ii) **(ख)** अव्यय, क्रिया विशेषण, कालवाचक
व्याख्या: अव्यय, क्रिया विशेषण, कालवाचक
(iii) **(घ)** गुणवाचक विशेषण
व्याख्या: गुणवाचक विशेषण

(iv) **(क)** विशेषण, गुणवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, 'पान' विशेष्य।
व्याख्या: विशेषण, गुणवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, 'पान' विशेष्य।
(v) **(घ)** व्यक्तिवाचक संज्ञा, अपादान कारक, पुल्लिंग
व्याख्या: जहां व्यक्तिगत रूप से किसी वस्तु या जीव के नाम का बोध हो तो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते है।

5. निर्देशानुसार 'रचना के आधार पर वाक्य भेद' पर आधारित पाँच बहुविकल्पी प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(i) **(ख)** सरल वाक्य
व्याख्या: सरल वाक्य
(ii) **(क)** विकल्प (iv)
व्याख्या: सायंकाल तक सभी पक्षी वापस आ गए।
(iii) **(ग)** राहुल घर चला गया और सो गया।
व्याख्या: राहुल घर चला गया और सो गया।
(iv) **(घ)** वह स्टेडियम गया और उसने क्रिकेट मैच देखा।
व्याख्या: वह स्टेडियम गया और उसने क्रिकेट मैच देखा।
(v) **(घ)** बिना पाँव धोए आपको नाव पर नहीं चढ़ाऊँगा। (विशेषण उपवाक्य)
व्याख्या: बिना पाँव धोए आपको नाव पर नहीं चढ़ाऊँगा। (विशेषण उपवाक्य)

6. निर्देशानुसार 'अलंकार' पर आधारित पाँच बहुविकल्पी प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(i) **(क)** अतिश्योक्ति अलंकार
व्याख्या: अतिश्योक्ति अलंकार
(ii) **(ख)** मानवीकरण अलंकार
व्याख्या: मानवीकरण अलंकार
(iii) **(घ)** मानवीकरण अलंकार
व्याख्या: मानवीकरण अलंकार
(iv) **(क)** मानवीकरण अलंकार
व्याख्या: मानवीकरण अलंकार
(v) **(ख)** मानवीकरण अलंकार
व्याख्या: मानवीकरण अलंकार

7. गद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित दो बहुविकल्पी प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए-

(i) **(क)** भटियारखाना
व्याख्या: भटियारखाना
(ii) **(ग)** खाने से अमाशय पर बोझ पड़ता है
व्याख्या: नवाब के अनुसार खीरा खाने से अमाशय पर बोझ पड़ता है।

8. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**
बार-बार सोचते, क्या होगा उस कौम का जो अपने देश की खातिर घर-गृहस्थी-जवानी-ज़िदगी सब कुछ छोड़ देने वालों पर भी हँसती है और अपने लिए बिकने के मौके ढूँढती है। दुः खी हो गए। पंद्रह

दिन बाद फिर उसी कस्बे से गुज़रे। कस्बे में घुसने से पहले ही ख्याल आया कि कस्बे कि हृदयस्थली में सुभाष की प्रतिमा अवश्य ही प्रतिष्ठापित होगी, लेकिन सुभाष की आँखों पर चश्मा नहीं होगा....! क्योंकि मास्टर बनाना भूल गया।.... और कैप्टन मर गया। सोचा, आज वहाँ रुकेंगे नहीं, पान भी नहीं खाएँगे, मूर्ति की तरफ़ देखेंगे भी नहीं, सीधे निकल जाएँगे। ड्राइवर से कह दिया, चौराहे पर रुकना नहीं, आज बहुत काम है, पान आगे कहीं खा लेंगे।

(i) **(क)** पंद्रह दिन बाद
व्याख्या: पंद्रह दिन बाद
(ii) **(क)** स्वार्थी लोग
व्याख्या: स्वार्थी लोग
(iii) **(ख)** सभी विकल्प सही हैं
व्याख्या: सभी विकल्प सही हैं
(iv) **(ग)** सभी विकल्प सही हैं
व्याख्या: सभी विकल्प सही हैं
(v) **(ख)** द्विगु समास
व्याख्या: द्विगु समास

9. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**
नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा।।
आयेसु काह कहिअ किन मोहि। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही।।
सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरिकरनी करि करिअ लराई।।
सुनहु राम जेहि सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा।।
सो बिलगाउ बिहाइ समाजा। न त मारे जैहहिं सब राजा।।
सुनि मुनिबचन लखन मुसुकाने। बोले परसुधरहि अवमाने।।
बहु धनुहीं तोरी लरिकाईं। कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं।।
येहि धनु पर ममता केहि हेतू। सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतू।।
रे नृप बालक कालबस, बोलत तोहि न सँभार।
धनुही सम तिपुरारि धनु, बिदित सकल संसार।।

(i) **(घ)** शिव धनुष तोड़ने वाला आपका ही दास है
व्याख्या: शिव धनुष तोड़ने वाला आपका ही दास है
(ii) **(घ)** सेवक वही है जो सेवा करता है
व्याख्या: सेवक वही है जो सेवा करता है
(iii) **(घ)** विकल्प (i)
व्याख्या: विकल्प (i)
(iv) **(क)** नाथ
व्याख्या: नाथ
(v) **(ख)** महर्षि परशुराम का
व्याख्या: महर्षि परशुराम का

10. पद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित दो बहुविकल्पी प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए-

(i) **(घ)** वसंत ऋतु
व्याख्या: अट नहीं रही कविता में कवि ने वसंत ऋतु की सुंदरता का वर्णन किया है।
(ii) **(घ)** वह मुख्य गायक का मान रखने के लिए ऐसा करता है
व्याख्या: वह मुख्य गायक का मान रखने के लिए ऐसा करता है।

खंड - ख (वर्णनात्मक प्रश्न)

11. पद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में लिखिए-

(i) भोली-भाली गोपियाँ अपने प्रिय कृष्ण के रूप-माधुर्य पर मोहित होकर उनके प्रेम में इतना लीन हो गई हैं कि अब कभी भी उनसे विमुख नहीं हो सकतीं। उनकी दशा उन चींटियों के समान हो गई है जो गुड़ पर आसक्त होकर उससे चिपट जाती हैं और स्वयं को कभी भी मुक्त नहीं कर पातीं तथा वहीं अपने प्राण त्याग देती हैं।

(ii) "संगतकार की हिचक उसकी विफलता नहीं बल्कि मनुष्यता है।" अर्थात जब मुख्य गायक का संगतकार साथ देता है तो वह अपनी आवाज़ व प्रतिभा को ऊँचा होने से रोक देता है। यही उसकी मनुष्यता है। ऐसा वह इसलिए करता है ताकि मुख्य गायक का प्रभाव व सम्मान् बना रहे। उसका उद्देश्य गायक की आवाज़ को दबाना नहीं बल्कि उसे सुदृढ़ बनाना है। यह हिचक उसकी आवाज़ में साफ सुनाई देती है। इसे उसकी मनुष्यता का परिचायक समझा जाना चाहिए। यह मनुष्यता वह मुख्य गयक का साथ देकर कायम रखता है।

(iii) 'आत्मकथ्य' कविता की काव्यभाषा की महत्वपूर्ण विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

i. कवि ने इस कविता में खड़ी बोली के परिष्कृत रूप का उपयोग किया है।
आत्मकथ्य में तत्सम शब्दों को भावों के अनुकूल किया गया है। उदाहरण-
"इस गंभीर अनंत नीलिमा में असंख्य जीवन-इतिहास।"
"भूलें अपनी या प्रवंचना औरों की दिखलाऊँ मैं।।"

ii. इस कविता में कवि ने प्रतीकात्मक शब्दों का काफी प्रयोग किया है। उदाहरण-
"मधुप गुन-गुनाकर कह जाता कौन कहानी यह अपनी, मुरझाकर गिर रही पत्तियाँ, देखो कितनी आप घनी।"
यहाँ 'मधुप' मन का प्रतीक है, तो 'मुरझाकर गिरती हुई पत्तियाँ' नश्वरता का प्रतीक है।

iii. इस कविता कवि ने प्रकृति प्रसंगों के माध्यम से कवि ने प्रेयसी के सौदर्य को अभिव्यक्त किया है। उदाहरण-
"जिसके अरुण कपोलों की मतवाली सुंदर छाया में।
अनुरागिनी उषा लेती थी निज सुहाग मधुमाया में।"

iv. अलंकारों के प्रयोग ने भी इस कविता के काव्य को काफी रोचक बना दिया है। उदाहरण-
पुनरुक्तिप्रकाश- आलिंगन में आते-आते।
अनुप्रास अलंकार-
i. हँसते होने वाली।
ii. कौन कहानी यह अपनी।

(iv) फसल उपजाने के लिए निम्न आवश्यक तत्व हैं-

i. जल- नदियों का जल
ii. किसान के द्वारा फसल को उगाने में किया गया श्रम
iii. मिट्टी अथवा मृदा के गुण या तत्व
iv. सूर्य का प्रकाश

v. बहती हुई हवा।
उक्त सभी से फसल का अस्तित्व होता है।

12. गद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में लिखिए-

(i) लेखक ने बिस्मिल्ला खाँ को वास्तविक अर्थों में सच्चा इंसान कहा है, इसके कई कारण रहे। वे सांप्रदायिक सौहार्द व मिली-जुली संस्कृति के प्रतीक थे। वे अपना जीवन सीधे-सादे ढंग से व्यतीत करते थे। उन्होंने दोनों धर्मों को बराबर का दर्जा दिया। वे पाँचों वक्त नमाज पढ़ते थे। उनकी बाबा विश्वनाथ और बाला जी मंदिर में भी आस्था थी। मुहर्रम पर वे नौहा बजाते थे तो संकट मोचन मंदिर पर संगीत आयोजन में भाग लेने भी जाते थे। उनकी 14 वर्ष की आयु होते ही अपने बड़ों द्वारा दादा, पिता, नाना, मामा से बालाजी के मंदिर में पारंपरिक रूप से होने वाले शहनाई के रियाज की शिक्षा शुरू हो गई।
(ii) मनुष्य के अंदर की सहज संस्कृति अर्थात् अंतःप्रेरणा को संस्कृति की जननी कहा जा सकता है, क्योंकि इसी अंतःप्रेरणा के कारण तन ढँका और पेट भरा होने पर भी वह खाली नहीं बैठता है। वह अपनी बुद्धि और विवेक के बल पर निःस्वार्थ भाव के वशीभूत होकर मानवता के कल्याण की बात सोचता है और कार्य करता है।
(iii)कॉलेज वालों के अनुसार मन्नू भंडारी की हिंदी की अध्यापिका शीला अग्रवाल ने मन्नू और अन्य छात्रों को भड़काया था इसलिए अनुशासन बिगाड़ने का आरोप लगाकर कॉलेज वालों ने उन्हें नोटिस दिया था|
(iv)बालगोबिन भगत की पुत्रवधू उन्हें अकेले इसलिए नहीं छोड़ना चाहती थी क्योंकि पुत्र की मृत्यु के बाद अब भगत अकेले रह गए थे| उन्होंने कभी किसी के आगे सहायता के लिए हाथ नही फैलाया। वृद्धावस्था में उनकी देखभाल करने वाला कोई नहीं था| पतोहू को चिंता थी कि कौन उनकी देखभाल करेगा| कौन उन्हें खाना बनाकर खिलायेगा और कौन बीमारी में उन्हें दवा देगा|

13. पूरक पाठ्यपुस्तक के पाठों पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 -शब्दों में लिखिए-

(i) 'मैं क्यों लिखता हूँ?' पाठ के द्वारा लेखक श्री अज्ञेय ने विज्ञान के वीभत्स रूप की अनुभूति पाठकों को इस स्तर तक करवाई है कि वे सोचने को विवश हो उठें कि एक समर्थ विद्धा का ऐसा दुरुपयोग क्यों। लेखक को पत्थर पर मानव की छाया देखकर जो थप्पड़-सा लगा अनुभव होता है वह समस्त मानव-जाति के लिए ही एक चोट है। कोई भी प्रबुद्ध पाठक इस अनुभूति से निस्पृह नहीं रह सकता। हमारी संवेदनशीलता और विवेक ही हमें यह समझा सकते हैं कि हम विज्ञान के दुरुपयोग का ऐसा अन्य उदाहरण उपस्थित न होने दें।
(ii) लेखिका ने यह बात उन स्त्रियों को देखकर कही है जो पहाड़ों के भारी-भरकम पत्थरों को तोड़कर रास्ता बनाने का श्रमसाध्य कार्य करने में लगी रहती हैं। उन्हें बहुत कम पैसा मिलता है, पर वे देश-समाज को बहुत अधिक लौटा देती हैं। देश की आम जनता भी देश की प्रगति में भरपूर योगदान करती हैं और उसे उतना नहीं मिल पाता जितने की वह हकदार होती है। देश के श्रमिक एवं किसान देश की प्रगति के लिए अनेक प्रकार के कार्यों के द्वारा अपना सहयोग देते हैं। यदि वे कार्य न करें तो देश प्रगति की राह पर आगे नहीं बढ़ सकता। उसके अलावा अन्य लोगों की भी बहुत बड़ी भूमिका है। देश की प्रगति में प्रत्येक नागरिक की भी अहम भूमिका हैं । वह अपने वेतन व सुख-सुविधाओं की परवाह किए बिना देश की प्रगति के लिए अपना सहयोग देते हैं।देश के किसान भी धूप, सर्दी की परवाह किए बिना सबके लिए अन्न उगा कर सहयोग करते हैं। देश का फौजी व वैज्ञानिक भी कम वेतन पर पूर्ण निष्ठा से सेवा कर प्रगति के नये रास्ते खोलता है।

(iii)भोलानाथ के पिता सुबह-सवेरे उठकर भोलानाथ को भी नहला-धुलाकरअपने साथ पूजा पर बिठा लेते थे और भोलानाथ के ललाट पर भभूत का तिलक लगा कर उस पर भभूत से अर्धचन्द्राकार रेखाएँ बना देते थे। भोलानाथ के सिर पर लम्बी-लम्बी जटाएँ होने और भभूत लगा देने के कारण वह बमभोला बन जाता | पिताजी प्यार से उसे 'भोलानाथ' कहकर पुकारते थे। वे उसे अपने कंधों पर बैठाकर गंगाजी पर लेकर जाते थे। रास्ते में पड़ने वाले पेड़ों की शाखाओं पर वे उसे झूला झुलाते | कभी-कभी वे उसके साथ कुश्ती लड़ते और अपने आप हार जाते थे। हारने के बाद वे बनावटी रोना रोने लगते थे जिसे देखकर भोलानाथ खिलखिलाकर हँसने लगता था। पिताजी भोलानाथ को गोरस और भात सानकर बड़े प्यार से खिलाते थे। माँ द्वारा उसके सिर में तेल डालकर चोटी करने पर जब वह रोने लगता था तो पिताजी उसे गोदी में लेकर बाहर निकल जाते जहाँ वह अपने दोस्तों की टोली में शामिल हो जाता | वे उसके प्रत्येक खेल में शामिल रहते | चूहे के बिल से साँप के निकल आने पर भोलानाथ के डर जाने पर पिताजी तेजी से उसकी तरफ दौड़कर आते हैं और उसे मनाने का प्रयास करते हैं। पिता जी का भोलानाथ से वात्सल्यपूर्ण संबंध था | इसी प्रकार भोलानाथ का भी अपने पिता से आत्मीयता का संबंध था | उनके रिश्तों में प्यार और दोस्ती थी | भोलानाथ को अपने पिता पर पूर्ण विश्वास था, तभी अध्यापक द्वारा स्कूल में रोकने पर वह रोने लगा था क्योंकि उसे विश्वास था कि पिताजी उसे यहाँ से ले जाएँगे|

14. सेवा में,
संपादक महोदय,
दैनिक जागरण
नई दिल्ली,
विषय : धूम्रपान छोड़ें, जीवन नहीं। धूम्रपान की समस्या पर चिंता व्यक्त करने हेतु पत्र।
महोदय,
हर कोई जानता है कि तंबाकू के सेवन से हमारे स्वास्थ्य पर विनाशकारी परिणाम हो सकता है। फिर भी, कई लोग जोखिम को नजरअंदाज करने और धूम्रपान करने का निर्णय लेते हैं। सिगरेट के धुएं में 4,000 से अधिक रासायनिक पदार्थ मौजूद हैं, जिनमें कम से कम 50 शामिल हैं जो कैंसर का कारण बन सकते हैं। इन पदार्थों में आर्सेनिक, टार और कार्बन मोनोऑक्साइड शामिल हैं। इन जहरीले उत्पादों के अलावा, सिगरेट में निकोटीन भी होता है, जो तंबाकू के लिए शारीरिक और मनोवैज्ञानिक लत का कारण बनता है।
धूम्रपान से आपके फेफड़े बहुत बुरी तरह प्रभावित हो सकते हैं। खाँसी, जुकाम, घरघराहट और दमा बस शुरुआत है। धूम्रपान से निमोनिया, वातस्फीति और फेफड़ों के कैंसर जैसे घातक रोग हो सकते हैं। धूम्रपान से फेफड़े के कैंसर से 80% लोगों की मृत्यु और 81% मौतों में क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज (COPD)से मृत्यु होती है। जिस कारण यह समस्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। आपसे अनुरोध है कि इस समस्या की तरफ़ ध्यान देकर सरकार को आगाह करने का प्रयास करें।
धन्यवाद
भवदीय
गोविन्द सिंह राणा

अथवा

गोविन्द छात्रावास,
गौतम नगर, दिल्ली।
27 फरवरी, 2019
पूज्या माता जी,
सादर चरणस्पर्श।
आपका भेजा पत्र मिला। पढ़कर सब समाचार पता चला।

माँ, आपके ही मार्ग निर्देशन में गत वर्ष मैंने परीक्षा की तैयारी की थी और प्रथम स्थान प्राप्त किया। अच्छा परीक्षा परिणाम लाने के लिए मुझे विद्यालय के वार्षिकोत्सव पर सम्मानित एवं पुरस्कृत करने का निर्णय विद्यालय द्वारा लिया गया है। मैं चाहता हूँ कि इस अवसर पर आप भी वार्षिकोत्सव में उपस्थित रहो। इसी संबंध में सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि मेरे विद्यालय का वार्षिकोत्सव 15 मार्च को मनाया जाएगा। इस कार्यक्रम में उपशिक्षा निदेशक महोदय मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे। माँ, मैं चाहता हूँ कि यह पुरस्कार तुम्हारी आँखों के सामने ग्रहण करूँ। इस अवसर पर पुरस्कार के साथ-साथ मुझे आपके पावन आशीर्वाद की आवश्यकता है। तुम्हारे हाथों का प्यार भरा स्पर्श पाकर मैं स्वयं को धन्य महसूस करता हूँ। आप अपने आने की सूचना पत्र में लिखना, ताकि मैं आपको स्टेशन पर लेने आ सकूँ। मैं आपके आने की बेचैनी से प्रतीक्षा करूंगा। शेष सब ठीक है। पूज्य पिता जी को चरण स्पर्श कहना।

आपका प्रिय पुत्र,

राहुल

15. प्रति,

महाप्रबंधक

खादी ग्रामोद्योग

किंग्सवे कैंप, दिल्ली।

विषय- विक्रय प्रतिनिधि पद हेतु आवेदन-पत्र।

महोदय,

दिनांक 05 मई, 20xx के 'पंजाब केसरी' समाचार-पत्र से ज्ञात हुआ कि गांधी जयंती के अवसर पर खादी एवं हथकरघा की बनी वस्तुओं की बिक्री बढ़ाने हेतु इस बोर्ड को विक्रय प्रतिनिधियों की आवश्यकता है। इस पद के लिए मैं भी आवेदन-पत्र भेज रहा हूँ। मेरा संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है-

नाम - राजेश सैनी

पिता का नाम - श्री फूल सिंह सैनी

जन्मतिथि - 15 दिसंबर, 1991

पता - wz15, मौर्या इंक्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली।

शैक्षणिक योग्यताएँ-

दसवीं कक्षा	सी०बी०एस०ई० बोर्ड	2006	74%
बारहवीं कक्षा	सी०बी०एस०ई० बोर्ड	2008	80%
बी.बी.ए.	बिहार टेक्नीकल विश्वविद्यालय	2011	86%
एम.बी.ए.	बिहार टेक्नीकल विश्वविद्यालय	2013	82%

अनुभव- भारत हैंडलूम में अंशकालिक विक्रय प्रतिनिधि - दो साल।

घोषणा- उपर्युक्त विवरण पूर्णतया सत्य है। इसमें न कुछ झूठ है और न छिपाया गया है। मैं आपको आश्वस्त करता हूँ कि सेवा का मौक़ा मिलने पर मैं आपको पूर्णतया संतुष्ट रखने का प्रयास करूँगा।

धन्यवाद

राजेश सैनी

हस्ताक्षर ....

दिनांक 06 मई, 20xx

संलग्न- समस्त प्रमाण पत्रों एवं अनुभव प्रमाणपत्र की छाया प्रति।

अथवा

From: pawan@mycbseguide.com

To: abcschool@gmail.com

CC ...
BCC ...
विषय - फुटबॉल मैच खेलने की अनुमति के संबंध में
महोदय,
सविनय निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय की फुटबॉल टीम का कप्तान हूँ। हम अपने अभ्यास के लिए दिल्ली शिक्षा भारती पब्लिक स्कूल की फुटबॉल टीम से मैच खेलना चाहते हैं। हर वर्ष हमारा इसी स्कूल की टीम से ही फाइनल में मुकाबला होता है। हमारी टीम प्रतियोगिता के लिए तैयार है। अतः मेरा आपसे आग्रह है कि आप मुझे आज्ञा देने की महान कृपा करें और साथ ही दिल्ली शिक्षा भारती पब्लिक स्कूल के प्राचार्य को भी मैच देखने के लिए आमंत्रित करें।
पवन

16.

आपके दाँतों को रखे चमकदार, ताज़गी को सदा रखे बरकरार

चमक दंत टूथपेस्ट

चमक दंत टूथपेस्ट की विशेषताएँ-
- **सबसे सस्ता, सबसे अच्छा**
- **मजबूत दाँत**
- **स्वस्थ मसूड़े**
- **दुर्गंध से छुटकारा**
- **कीटाणुओं का सफाया**
- **दाँतों के पीलेपन से छुटकारा**
- **दांतों के दर्द से आजादी**

मूल्य सिर्फ़ 10 से 35 रूपए तक
सभी मुख्य स्टोर पर उपलब्ध

अथवा

संदेश

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा
झंडा ऊँचा रहे हमारा

15 अगस्त 2020
प्रातः 5:30 बजे
सभी देशवासियों को 15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ। स्वतंत्रता के लिए हमें अनेक कुर्बानियाँ देनी पड़ी और लंबा संघर्ष करना पड़ा है। इस लड़ाई में हर धर्म, जाति, रंग और नस्ल के लोगों बढ़-चढ़कर भाग लिया। आज हम आज़ाद है सुरक्षित है सिर्फ अपने वीर बहादुर, जवानों की कुर्बानी से। आओ हम इसी एकता को कायम रखते हुए आज भी आगे बढ़ने का

संकल्प करते हैं।
जय हिंद,
नरेंद्र मोदी

17. **स्वास्थ्य की रक्षा**

वर्तमान समय में प्रत्येक मनुष्य की जीवन-शैली इतनी भागदौड़ से भर गई है कि वे अपने स्वास्थ्य की रक्षा कर पाने में असमर्थ हो चुके हैं। जहाँ पहले के समय में व्यक्ति की औसत आयु 75 वर्ष थी, वह आज घटकर 60 वर्ष हो गई है। स्वास्थ्य की रक्षा बहुत ही आवश्यक है। खराब स्वास्थ्य के साथ व्यक्ति कोई भी कार्य उचित तौर-तरीके से नहीं कर पाता है। प्रत्येक व्यक्ति को आधारभूत वस्तुओं का संचय करने के लिए स्वस्थ रहने की आवश्यकता है। कहा जाता है स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का वास होता है, इसीलिए स्वास्थ्य की रक्षा हमारे लिए आवश्यक है। स्वास्थ्य की रक्षा के लिए पोषक भोजन लेना अति आवश्यक है।

हरी सब्जियाँ, दूध, दही, फल आदि का सेवन हमारे शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हुए हमारे स्वास्थ्य की रक्षा करता है। आजकल जंकफूड और फास्ट फूड का प्रचलन अपने चरम पर है। इसकी चपेट में लाखों लोग आ चुके हैं। और इसी कारण वे अपना स्वास्थ्य खराब कर चुके हैं। आजकल के बच्चों को मोटापा, सुस्ती व भिन्न-भिन्न प्रकार की बीमारियों ने जकड़ लिया है। हमें जंक फूड एवं फास्ट-फूड से दूरी बनाते हुए पौष्टिक आहार लेने चाहिए, जिससे हम अपने स्वास्थ्य की रक्षा करते हुए, अपने और दूसरों के जीवन को खुशियाँ प्रदान कर सकें।

अथवा

श्रम का मतलब है - मनुष्य द्वारा अपने किसी विशेष प्रयोजन के लिए प्रकृति में किया जा रहा सचेत परिवर्तन। श्रम का उद्देश्य निश्चित समाज के लिए उपयोगी उत्पादों को पैदा करना है; जाहिर है, इसके लिए उसे अपने पूर्व के अनुभवों के आधार पर पहले मानसिक प्रक्रिया सम्पन्न करनी पड़ती है, आवश्यकता क्या है, उसकी तुष्टि के लिए क्या करना होगा, किस तरह करना होगा, एक निश्चित योजना और क्रियाओं, गतियों का एक सुनिश्चित ढाँचा दिमाग में तैयार किया जाता है तत्पश्चात उसी के अनुरूप मनुष्य प्रकृति पर कुछ निश्चित साधनों के द्वारा कुछ निश्चित शारीरिक क्रियाएँ सम्पन्न करता है। शारीरिक श्रम से मनुष्य का शरीर स्वस्थ रहता है तथा शारीरिक श्रम के द्वारा उसे धन की प्राप्ति होती है, जिससे वह अपना जीविकोपार्जन आसानी से करता है। कठोर श्रम करने वाला मनुष्य सदैव उन्नति करता है। बड़े से बड़े तेज और समर्थ व्यक्ति तनिक आलस्य से जीवन की दौड़ में पिछड़ जाते है, किंतु श्रम करने वाले व्यक्ति दुर्बल व साधनहीन होकर भी सफलता की दौड़ में आगे निकल जाते हैं।

सुझाव - श्रम प्रत्येक मनुष्य, जाति तथा राष्ट्र की उन्नति के लिए अनिवार्य है। मनुष्य जितना श्रम करता है उतनी ही उन्नति कर लेता है। हमारे देश में कई औद्योगिक घराने हैं, जिन्होंने साम्राज्य स्थापित कर रखे हैं। यह सब उनके श्रम का ही परिणाम है। पंडित जवाहरलाल नेहरू तथा श्री लाल बहादुर शास्त्री अपने श्रम के कारण ही देश के प्रधानमन्त्री बन सके। आइंस्टीन ने श्रम किया और वे विश्व के सबसे महान वैज्ञानिक बन गए। अमरीका, रूस, जापान तथा इंग्लैण्ड ने श्रम के माध्यम से ही उन्नति की है और आज विश्व के सबसे समृद्ध देश बन गए हैं। अतः यह कहना अनुचित न होगा कि श्रम के बिना कुछ भी कर पाना संभव नहीं है।

अथवा

'बाल मज़दूरी' से तात्पर्य ऐसी मज़दूरी से है, जिसके अंतर्गत 5 वर्ष से 14 वर्ष तक के बच्चे किसी संस्थान में कार्य करते हैं। जिस आयु में उन बच्चों को शिक्षा मिलनी चाहिए, उस आयु में वे किसी दुकान रेस्टोरेंट पटाखे की फैक्टरी, हीरे तराशने की फैक्टरी, शीशे का सामान बनाने वाली फैक्टरी आदि में काम करते हैं।

भारत जैसे विकासशील देश में बाल मजदूरी के अनेक कारण हैं। अशिक्षित व्यक्ति शिक्षा का महत्त्व न समझ पाने के कारण अपने बच्चों को मज़दूरी करने के लिए भेज देते हैं। जनसंख्या वृद्धि बाल

मज़दूरी का दूसरा सबसे बड़ा कारण है। निर्धन परिवार के सदस्य पेट भरने के लिए छोटे-छोटे बच्चों को काम पर भेज देते हैं।
भारत में बाल मज़दूरी को गंभीरता से नहीं लिए जाने के कारण इसे प्रोत्साहन मिलता है। देश में कार्य कर रही सरकारी, गैर-सरकारी और निजी संस्थाओं की इस समस्या के प्रति गंभीरता दिखाई नहीं देती। बाल मज़दूरी की समस्या का समाधान करने के लिए सरकार कड़े कानून बना सकती है। समाज के निर्धन वर्ग को शिक्षा प्रदान करके बाल मज़दूरी को प्रतिबंधित किया जा सकता है। जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण कर भी बाल मज़दूरी को नियंत्रित किया जा सकता है। ऐसी संस्थाओं को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए, जो बाल मज़दूरी का विरोध करती हैं या बाल मज़दूरी करने वाले बच्चों के लिए शिक्षा से जुड़े कार्यक्रम चलाती हैं।